VKG-27

निबन्ध (ESSAY)

DTVF/17–ESY-E2

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): MUKESH KUMAR LUNAYAT

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 02/06/08/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	2	5	5	9	0	5

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam.): HINDI

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Mukesh

101

प्रश्न-पत्र सम्बन्धी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबन्ध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू० सी० ए०) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएँगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट किए गए शब्द-संख्या के अनुसार होना चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए कोई पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिए।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड A और B में प्रत्येक से एक-एक चुनकर, दो निबंध लिखिये जो प्रत्येक लगभग 1000–1200 शब्दों में हो: 125×2 = 250

Write TWO Essays, choosing ONE from each of the Sections A and B, in about 1000–1200 words each: 125×2 = 250

खण्ड–A / SECTION –A

1. योग में बीमारी ही नहीं बल्कि अर्थव्यवस्था को सुधारने की भी क्षमता है।
   Yoga has potentional not only to heal diseases but economy also.

2. अन्याय की कहीं भी मौजूदगी सर्वत्र न्याय के लिये खतरा है।
   Injustice anywhere is threat to justice everywhere.

3. निषेध की राजनीति: कम व्यावहारिक, अधिक आदर्शवादी।
   Politics of ban: More ideological less practical.

4. महिलाओं की भागीदारी से बढ़ता हुआ आर्थिक विकास।
   Increasing economic growth through women's participation.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. महिलाओं की भागीदारी से बढ़ता हुआ आर्थिक विकास।

इतिहास की किताबें भिन्न हो जाती हैं यदि उनमें महिलाओं की भूमिका एवं योगदान को शामिल कर लिया जाता है।
— राष्ट्रीय इतिहास हेरवन परियोजना

ऐसा ही कुछ आर्थिक विकास की प्रक्रिया से साथ है। यदि आर्थिक विकास की प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी, पुरुषों के साथ कदम मिलाते हुए शामिल की जाए तो न केवल आर्थिक विकास की दशा अपितु आर्थिक विकास के साथ-साथ सामाजिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक-नैतिक पहलुओं के विकास की दिशा भी बदल जाती है।

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) की एक रिपोर्ट के अनुसार यदि अर्थव्यवस्था में पुरुषों के समान महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित की जाए तो भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 27% तक की वृद्धि हो सकती है। इस संदर्भ में विकसित देशों की तुलना में विकासशील देशों में परिणाम और भी अधिक विस्मयकारी सिद्ध होंगे क्योंकि इन देशों में महिला-पुरुष श्रम भागीदारी दर में अंतराल काफी अधिक है। निसंदेह यदि इन अंतराल को कम किया जाए तो आर्थिक विकास का पहिया "दिन दोगुनी-रात चौगुनी" गति से दौड़ेगा।

यहाँ पर निश्चित ही यह प्रश्न उठता है कि आर्थिक विकास का क्या आशय है? क्या आर्थिक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को सकल घरेलू उत्पाद में प्रतिशत वृद्धि तक ही सीमित किया जा सकता है? या फिर आर्थिक विकास में अन्य पहलुओं के विकास को भी शामिल किया जाना चाहिए? आर्थिक वृद्धि एवं आर्थिक विकास में कौनसा अधिक संगत है? महिलाओं की भागीदारी कैसे इन सभी को प्रभावित कर सकती है?

वस्तुतः आर्थिक विकास का कोई एक निश्चित मापदंड नहीं हो सकता है। परंतु इस तथ्य में कोई दोराय नहीं है कि आर्थिक विकास के प्रत्येक संदर्भ में महिलाओं की भागीदारी उसे अधिक तीव्र, धारणीय एवं समावेशी विकास की ओर अग्रसर करेगी। आर्थिक विकास का वही मॉडल सर्वोत्तम होगा जो तीव्र, धारणीय एवं समावेशी हो, महिलाओं को सभी स्तर चाहे वह ग्रामीण-शहरी स्तर हो, अमीर-गरीब, बहुसंख्यक-अल्पसंख्यक, अगड़ा-पिछड़ा, दलित या फिर अनुसूचित जनजाति, साक्षर-निरक्षर, कुशल-अकुशल श्रमिक ही क्यों न हो। इनमें से प्रत्येक वर्ग एवं स्तर पर हमें सभी महिलाओं को जो काम करने की इच्छुक हैं या जिनमें कार्य करने की क्षमता है, सामाजिक-सांस्कृतिक-सामुदायिक-पारिवारिक प्रतिरोधों व पूर्वाग्रहों से ऊपर उठते हुए उन्हें आर्थिक विकास की प्रक्रिया में शामिल करना होगा। तभी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विकास का चक्र जारी रह सकेगा।

आर्थिक संदर्भ में चर्चा की जाए तो प्रत्येक क्षेत्र - प्राथमिक, द्वितीयक एवं सेवा क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी विकास की गति को बढ़ाती है। भारत की आधी से अधिक जनसंख्या अभी भी कृषि में कार्यरत है। उनमें से अधिकांश महिलाएँ हैं। परन्तु यहाँ कृषि कार्य में महिलाओं की भागीदारी में गुणात्मक भेद है। अधिकांश महिलाएँ श्रमिक की भाँति कार्य करती हैं। उनका उत्पादन पर अधिकार नहीं होता। कई जगह तो उन्हें श्रम के बदले कोई भुगतान नहीं होता (Unpaid labour)। कृषि क्षेत्र में अच्छ भागीदारी के बावजूद महिलाओं के पास संपत्ति अधिकारों का अभाव है। विश्व बैंक के सर्वे के अनुसार यदि महिलाओं को कृषि भूमि पर संपत्ति स्वामित्व अधिकार प्राप्त हो तो वे कृषि आगतों में अच्छे से निवेश कर पाती हैं। इससे आर्थिक विकास दर में 1 से 2 % बिंदु की वृद्धि की क्षमता है। अतः महिलाओं को कृषिक्षेत्र में आर्थिक विकास के एजेंट बनाने हेतु संपत्ति अधिकारों का दिया जाना महत्वपूर्ण है।

इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि एवं अन्य संबद्ध उद्योगों, लघु व कुटीर उद्योगों, खादी व ग्रामोद्योग जिनका प्रभाव औपचारिक एवं वैश्वीकृत विश्व में गिरता जा रहा है, महिलाओं की भागीदारी बढ़ाकर एवं उन्हें आवश्यक क्रेडिट एवं अन्य आगत तक पहुंच सुनिश्चित करा कर आर्थिक विकास को बढ़ाया जा सकता है।

यही स्थिति विनिर्माण क्षेत्र की है। परन्तु प्राथमिक क्षेत्र की

प्राचीन काल के संदर्भ में भी महिलाओं की भागीदारी का भी उल्लेख करें।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तुलना में यह क्षेत्र महिलाओं से अछूता सा प्रतीत होता है। जो भी महिलाएँ हैं, अधिकांशतः दिहाड़ी मजदूर की स्थिति में हैं। 2022 तक सबको आवास प्रदान करने के महत्वाकांक्षी लक्ष्य, आधारिक संरचना - रोड, रेलवे, सड़क, बंदरगाह के विकास हेतु तीव्र प्रयास, स्वदेशी को बढ़ावा देने हेतु मेक-इन-इंडिया, तीव्र कल्याणकारी राज्य की भूमिका के रूप में सरकार द्वारा आधारिक संरचना के विकास के प्रयास, उपरोक्त सभी निर्माण क्षेत्र को आर्थिक विकास का इंजन बनाते हैं। परन्तु यदि जनसंख्या के आधे भाग को इससे दूर रखा गया तो निसंदेह यह क्षेत्र अपनी असीम संभावनाओं व क्षमताओं को साकारित नहीं कर सकेगा। अतः सरकार, समुदाय एवं निजी क्षेत्र, प्रत्येक स्तर पर विनिर्माण गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाने का प्रयास किया जाना न केवल समय की आवश्यकता है अपितु तीव्र, धारणीय एवं समावेशी विकास हेतु अपरिहार्य है।

सेवा क्षेत्र मौद्रिक संदर्भ में अर्थव्यवस्था में सर्वाधिक योगदान प्रदान करता है। महिलाएं इस क्षेत्र में अपनी क्षमताओं एवं कौशल का भरपूर योगदान दे सकती है। सेवा क्षेत्र - स्वास्थ्य, शिक्षा, संचार व प्रौद्योगिकी सेवाएं, रेस्त्रां, बाह्यस्रोतन (BPO's), ज्ञान आधारित बाह्यस्रोतन (KPO's) आदि को शामिल करता है। वर्तमान में भारत की

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वैश्विक सेवा बाजार में भागीदारी करीब 3% है। सरकार का लक्ष्य इसे आगामी 15 वर्षों में 5 गुणा बढ़ाते हुए 15% करना है, यदि इस लक्ष्य को पाना है तो महिलाओं की भागीदारी अवश्यंभावी है। चूंकि यह क्षेत्र कौशल की मांग करता है, लोकतांत्रिक समाज में महिलाओं को भी अवसर की समानता प्राप्त है, अतः कौशल विकास परियोजनाओं में महिलाओं को लक्षित करते हुए उन्हें सेवा क्षेत्र में योगदान हेतु सक्षम बनाने का प्रयास करना अपेक्षित है।

"यदि विकास की प्रक्रिया में स्त्री-पुरुष के समान सरोकारों को शामिल नहीं किया गया तो स्वयं विकास की प्रक्रिया संकटग्रस्त हो जाएगी"।

आशय है कि यदि विकास को एक ट्रेन मान लिया जाए, जिसके पुर्जे व तकनीकी चाहे कितनी भी पक्का हो, चाहे यह बुलेट ट्रेन ही क्यों न हो। इसको तेज से तेज गति में दौड़ने हेतु हमेशा दोनों पटरियों का ठीक एवं समान अंतराल पर निरन्तर बने रहना अत्यंत आवश्यक है। विकास रूपी ट्रेन की यही गाथा है। यदि आर्थिक विकास में महिलाओं को शामिल नहीं किया गया तो इस ट्रेन को दौड़ाना तो मुश्किल, अपने स्थान से हिलाना तक संभव नहीं हो पाएगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अब प्रश्न उठता है कि क्या महिलाओं की भागीदारी का यह पहलू आर्थिक-विकास तक ही सीमित है?
संभवत: एवं निश्चित: नहीं।
विकास एक चक्रीय प्रक्रिया है। इसे केवल एक पहलू के रूप में नहीं देखा जा सकता। आर्थिक रूप से महिलाओं को सशक्त करने से सामाजिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक-नैतिक विकास पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक क्षेत्र में संभावनाओं एवं क्षमताओं को तलाशने के नये क्षेत्र खुलते हैं। पुन: ऐसा होने से आर्थिक विकास पुष्ट व समृद्ध होता है।

सामाजिक संदर्भ में बात की जाए तो महिलाओं की बढ़ती भागीदारी न केवल आर्थिक दृष्टिकोण, अपितु सामाजिक दृष्टिकोण से भी लाभदायक है। एक आर्थिक रूप से सशक्त महिला, समाज की प्रथम ईकाई अर्थात् परिवार में बेहतर भूमिका निभा सकती है। वह स्वयं एवं अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान कर सकती है। बच्चे देश का भविष्य है। यदि इस प्रक्रिया से वे गुजरते हैं तो आने वाले कल में बेहतर मानव संसाधन के रूप में देश की सेवा कर आर्थिक विकास को बढ़ायेंगे।
आर्थिक सशक्तिकरण महिलाओं की निर्णयन क्षमता को बढ़ाता है। यह उनमें स्वतंत्रता का भाव उत्पन्न करता है। स्वतंत्रता प्रत्येक मनुष्य का मौलिक अधिकार है, स्वतंत्रता में पुरुष-स्त्री में भेद नहीं करती।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आर्थिक रूप से सशक्त महिलाएं राजनीतिक व नीति निर्माण प्रक्रिया में भागीदार बन विकास को और अधिक समावेशी बना सकती हैं। महिलाओं की संसद व राज्य विधानसभाओं में निम्न भागीदारी का कारण यदि समाज की पितृसत्तात्मक सोच के साथ साथ आर्थिक व संपत्ति के संसाधनों पर महिलाओं के नियंत्रण का अल्प या अनुपस्थित होने को माना जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।
पुनः यदि महिलाओं की कार्य में पुरुषों के समान भागीदारी हो, वे भी व्यावहारिक स्तर पर पुरुषों के समान राजनीतिक अधिकारों का प्रयोग कर पाये तो निसंदेह वे राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में ज्यादा योगदान दे पायेंगी।
सांस्कृतिक विकास में भी महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। संस्कृति एक निरन्तर प्रवाहशील अवधारणा है। महिलाओं की आर्थिक सशक्तता संस्कृति के क्षेत्र में भी नये पहलुओं को जन्म देती है। उदाहरणतः धीरे-धीरे भारत की शहरी संस्कृति में "वर्किंग-वुमन" "इंडिपेंडेंट वुमन" जैसे शब्द, आम होते जा रहे हैं।
महिलाएँ अगर स्वतंत्र होगी तो वे न केवल स्वयं के लिए अपितु राष्ट्र के आर्थिक विकास में भी बेहतर योगदान दे सकेंगी।
कारन की दृष्टि में भी महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देना 'न्यायसंगत' है। भारतीय संविधान

पर्यावरण, खेल, विज्ञान एवं अंतरिक्ष आदि के सन्दर्भ में भी महिलाओं के योगदानों का उल्लेख करें।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समानता का अवसर देता है। राज्य लिंग के आधार पर नियोजन में भेद नहीं कर सकता है। पुनः यदि महिलाएँ बाहरी दृष्टि से शिक्षित व समृद्ध होती हैं, अपने अधिकारों के प्रति सजग होती हैं, तो उनके द्वारा राष्ट्र के आर्थिक विकास में योगदान देने की संभावना अधिक होती है।

"महिलाएँ आधे आकाश को धारण करती हैं"। अतः नैतिक दृष्टिकोण से भी महिलाओं की प्रत्येक स्तर पर पुरुषों के समान भागीदारी को गलत नहीं ठहराया जा सकता। कांट के अनुसार प्रत्येक मनुष्य की मनुष्य होने के नाते एक न्यूनतम गरिमा है। महिलाएँ केवल प्राकृतिक जैविक भेद के अलावा किसी भी स्तर पर, किसी भी दृष्टिकोण से पुरुषों से कम नहीं हैं। यदि नैतिकता आधारित इस सोच को समाज, राजनीति, अर्थशास्त्र, कानून व संस्कृति में बढ़ावा दिया जाए तो प्रत्येक स्तर पर महिलाओं का पुरुषों के समान सक्षम होने का विचार जमीनी स्तर पर आधार तैयार करने लगेगा, जिसका परिणाम यह होगा कि प्रत्येक स्तर पर महिलाओं की भागीदारी बढ़ेगी और उसका अंतिम समन्वित परिणाम सतत, समावेशी एवं धारणीय आर्थिक विकास के रूप में सामने आएगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस संपूर्ण प्रक्रिया में यह स्पष्ट करना अत्यंत आवश्यक है कि विकास स्वतंत्रता न होकर मुक्ति है। आर्थिक विकास का लक्ष्य बिना राज्य के हस्तक्षेप के व्यक्ति को कुछ भी करने की स्वतंत्रता नहीं है, यह केवल 'लैसेज फेयर' का पालन मात्र नहीं है, क्योंकि स्वतंत्रता का यह पहलू विभेदों, समस्याओं को शामिल नहीं करता है। आर्थिक विकास मुक्ति इस अर्थ में है कि इसका लक्ष्य लिंग आधारित भेदभाव, नैतिक असमानता, असमान वेतन, गरीबी, भूखमरी आदि से मुक्ति पाना है।

महिलाओं की आर्थिक भागीदारी स्वयं के विकास से शुरू होते हुए परिवार, समुदाय, गाँव, राज्य, देश के माध्यम से सम्पूर्ण संसार में एक न्यायोचित विकास का मार्ग प्रशस्त करेगी। महिलाओं की आर्थिक स्वायत्तता व सशक्तता उनकी वृद्धावस्था में भी बेहतर देखभाल सुनिश्चित करेगी। प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष नामक 4 पुरुषार्थ माने गए हैं। समय आ गया है कि अब इन 4 पुरुषार्थों को 'पुरुषों' तक ही सीमित न रखते हुए जनसंख्या के दूसरे आधे भाग के हेतु भी बराबर प्रयोग में लाने के अवसर (समानता व भागीदारी) सुनिश्चित की जाए। क्योंकि कहा जाता है कि पैसा खुदा तो नहीं, परंतु खुदा से कम भी नहीं। अतः यदि महिलाओं का 'अर्थ' पर समान अधिकार नहीं होगा तो वे बाकी तीनों पुरुषार्थ (बेहतर होगा यदि महिलार्थ कहें) प्राप्त कर सकें।

महिलाओं की बढ़ती भागीदारी के सन्दर्भ में सरकारी एवं गैर सरकारी प्रयासों की चर्चा करें।

वाक्य संरचना पर ध्यान दें।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निसंदेह आर्थिक विकास को यदि गति प्रदान करनी है तो महिलाओं की भागीदारी प्रत्येक क्षेत्र में सुनिश्चित की जाएगी। हालांकि आजादी के बाद 70 सालों में महिलाओं ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी सफलता के परचम लहराए हैं, परन्तु हमें प्रत्येक क्षेत्र में कुछेक उदाहरण ही मिल पाते हैं। यदि विकास को समावेशी बनाया गया, विकास की प्रक्रिया में स्त्री-पुरुष के समान सरोकारों को शामिल किया गया तो वह दिन दूर नहीं होगा जब इन्द्रा नूई, चन्दा कोचर, वी.एस. सुबलक्ष्मी, कल्पना चावला, इन्दिरा गाँधी, पी.वी. सिंधु, दीपा करमाकर, साक्षी मलिक, जैसे विशिष्ट उदाहरण गिनने की हमें आवश्यकता नहीं पड़ेगी क्योंकि तब यह एक विशिष्टता न होकर सामान्य घटना हो जाएगी, यही विकास का लक्ष्य है।

स्पष्टतः महिलाओं की आर्थिक भागीदारी को न केवल सरकार अपितु ~~सम~~ परिवार, समुदाय, राज्य एवं कॉर्पोरेट स्तर पर भी प्रयास किये जाने चाहिए। महिलाओं को स्वयं इस हेतु आगे आने की जरूरत है। अब समय आ गया है कि महिलाएं स्वयं इस मुहिम का नेतृत्व करें। अंत में इस संदर्भ में यह ही मैं एक प्रगतिशील फिल्म 'पिंक' की ये उक्तियां अत्यंत सार्थक हैं:-

"तू खुद की खोज में निकल तू किसलिए हताश है
तू चल तेरे वजूद की समय को भी तलाश है
तुझसे लिपटी ये बेड़ियां, समझ ना इनको वस्त्र तू
ये बेड़ियां पिघाल के, बना ले इनको शस्त्र तू
चुनर को उड़ा ध्वज (Freedom) बना, आसमान कंपकंपाएगा
अगर तेरी चुनर गिरी, तो एक भूकंप आएगा।"

नकारात्मक पक्षों को भी चर्चा करें

घटता लिंगानुपात
भ्रूण हत्या
दहेज हिंसा आदि।

सराहनीय प्रयास

55

दृष्टि The Vision
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392334, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड–B / SECTION –B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

1. भारत को पहले खाद्य सुरक्षा फिर परमाणु सुरक्षा की आवश्यकता है।
   India needs food security first and nuclear security later.

2. जी.एस.टी.: सामान्यीकृत बाज़ार की ओर एक कदम।
   GST: A step towards common market.

3. भारत में भूजलीय क्षेत्रों का प्रबंधन: थोड़ा किया गया है, अधिक किये जाने की आवश्यकता है।
   Watershed management in India: Little done much needed.

4. ग्रामीण प्रकृति को बचाए रखते हुए गाँव का विकास।
   Developing villages while retaining its rural nature.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"ग्रामीण प्रकृति को बचाते हुए गाँव का विकास"

भारत की आत्मा गाँवों में बसती है। आत्मा मनुष्य के 2 पहलुओं - चेतन एवं जड़ में चेतन पक्ष का प्रतिनिधित्व करती है। चेतना का स्वरूप ही मनुष्य की प्रकृति को निर्धारित करता है। ठीक उसी प्रकार भारत का स्वरूप भी उसके गाँवों की दशा व दिशा से प्रतिबिंबित होता है। अतः एक सक्षम, विकसित, समृद्ध एवं पुष्ट भारत के लिए सक्षम, विकसित, समृद्ध एवं पुष्ट गाँवों का होना अत्यंत आवश्यक है।

गाँवों के महत्व के सन्दर्भ कुछ पंक्तियों की भी चर्चा करें।

2011 की जनगणना के अनुसार भारत की करीब 68% आबादी गाँवों में रहती है। अतः गाँवों का विकास अत्यंत आवश्यक है। परंतु प्रश्न उठता है कि गाँवों के विकास हेतु कौनसा मार्ग चुना जाए। सामान्यतः विकास को "शहरों के जैसा" बनाने के रूप में समझा जाता है। परन्तु गाँव, शहर नहीं हो सकते। ऐसा करना न तो वांछनीय है एवं न ही आवश्यक। इसी के साथ साथ गाँवों को जैसे वे हैं, उसी रूप में भी नहीं छोड़ा जा सकता है। आज विकास के सामान्य मापदंडों में लगभग अधिकांश मापदंडों पर गाँव शहरों से पिछड़े हैं। अतः उनके उत्थान हेतु

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गाँवों में भी शहरों के समान सुविधाओं एवं सेवाओं का विकास करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। परंतु इस प्रक्रिया में यह भी ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है कि गाँव के भौतिक स्वरूप के साथ छेड़छाड़ न की जाए। गाँव की भौतिक प्रकृति को अक्षुण्ण बनाए रखा जाए।

परंतु ऐसा कैसे संभव हो सकता है?
निसंदेह यह एक जटिल कार्य है परंतु एक बार जब यह निर्धारित कर लिया जाए कि हमें गाँव की कौनसी कमियों में सुधार लाना है एवं किन भौतिक विशेषताओं को संरक्षित करने हुए और अधिक फ्रूट करना है तो ग्रामीण-विकास अधिक आसान हो जाता है। इस हेतु गाँव की आर्थिकी, सामाजिकी एवं सांस्कृतिक विशिष्टताओं की पहचान करते हुए विकास की प्रक्रिया आरंभ की जा सकती है।

भारत में अधिकांश गाँवों में आजीविका का प्रमुख साधन कृषि एवं पशुपालन है। इसके साथ ही कृषि संबद्ध अन्य गतिविधियाँ, खादी व ग्रामोद्योग भी प्रमुख है। भारत में कृषि के समक्ष सबसे बड़ी समस्या ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि जोतों के निरन्तर अपघटन की है। इस समस्या के निवारण हेतु 'भूमि बैंक' की

ऐतिहासिक सन्दर्भ में विभिन्न सभ्यताओं के विकास में गाँव के महत्व को भी बताएँ।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संकल्पना को अपनाया जा सकता है। इसी के साथ ही 2022 तक भारतीय किसानों की आय को दुगुना करने हेतु सरकार द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न सिंचाई, ऋण, किसान क्रेडिट कार्ड योजना, फसल बीमा योजना आदि के बारे में किसानों में जागरूकता व पहुंच सुनिश्चित की जानी चाहिए। इसी के साथ-साथ सहकारी संघो के माध्यम से समय पर बीज, उर्वरक व अन्य कृषि आगतों की पूर्ति भी सुनिश्चित किये जाने के प्रयास करने चाहिए। कृषि न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था अपितु ग्रामीण विकास की रीढ़ है। पूर्वोत्तर भारत व पहाड़ी क्षेत्रों में बागवानी को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

ग्रामीण विकास हेतु इसका पहलु ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित कराना है। ध्यातव्य है कि भूतपूर्व राष्ट्रपति स्व. डॉ अब्दुल कलाम का यह स्वप्न था कि भारतीय गाँवों में शहरी जैसी कुलभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाए। इस हेतु सरकार द्वारा पुरा (PURA- Providing Urban facilities in Rural Areas) कार्यक्रम आरंभ किया गया था।

इस हेतु सर्वप्रथम एवं सर्वप्रमुख रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में गुणात्मक शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है। हालांकि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शिक्षा का अधिकार अधिनियम के आने से ग्रामीण क्षेत्रों में हमने लगभग 100 प्रतिशत प्राथमिक शिक्षा पंजीकरण अनुपात को प्राप्त कर लिया है। परंतु जैसा कि प्रथम NGO की ASER रिपोर्ट से स्पष्ट होता है ग्रामीण क्षेत्रों में सातवीं-आठवीं स्तर के बच्चों को साधारण गणित की समस्याएँ हल करना व अंग्रेजी का पाठ तक नहीं आता है। इसे शीघ्रतम संबोधित किये जाने की जरूरत है। शिक्षा की गुणवत्ता के साथ-साथ हमें ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा हेतु 3E अर्थात इक्विटी, एफिशिएंसी एवं एफेक्टिविटी को भी शामिल करने की आवश्यकता है। विद्यालयी स्तर पर ही सीनियर सेकेंडरी लेवल पर वोकेशनल कोर्सेज एवं कौशल विकास को शामिल करना आवश्यक है।

शिक्षा के क्षेत्र में मूलभूत आधारिक संरचना की उपलब्धता, सरकारी विद्यालयों तक कम्प्यूटर व ICT सुविधाओं की पहुँच को सुलभ कराना आवश्यक है। बालिकाओं हेतु पृथक एवं सुविधासम्पन्न आधारिक संरचना - टायलेट आदि बनाना अत्यंत आवश्यक है। विद्यालयों में मिड डे मील को भी और अधिक पोषणयुक्त बनाना आवश्यक है।

इसी के साथ-साथ अपर्याप्त आधारिक संरचना व सुविधा के ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत निजी विद्यालयों के नियमन की भी आवश्यकता है। शिक्षा ही वह उपकरण है जो दीर्घकाल में न केवल ग्राम बल्कि भारत हेतु उपलब्ध "डेमोग्राफिक-

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

डिविडेंट' की संभावनाओं को वास्तविकता में बदल सकेगी।

ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव भी समग्र विकास के समक्ष एक प्रतिरोध है। प्रत्येक गाँव में सामुदायिक चिकित्सा केन्द्र, पशु चिकित्सा केन्द्र खोलकर साथ ही उनके चिकित्सकों की उपस्थिति सुनिश्चित कर गाँवों में आधारभूत स्वास्थ्य सुविधाएँ पहुँचायी जा सकती हैं। इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत "आशा" (ASHA) को आधारभूत स्वास्थ्य प्रशिक्षण प्रदान कर और दृढ़ बनाया जा सकता है।

भारतीय परंपरागत आयुष (AYUSH) चिकित्सा प्रणाली हेतु गाँव एक मजबूत आधार प्रदान करते हैं। गाँवों में इन सुविधाओं का वैज्ञानिक स्तर पर विकास व उपलब्धता सुनिश्चित कर स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान करने के साथ-साथ गाँवों की मूल प्रकृति को बचाया जा सकता है।

सामाजिक संदर्भ में गाँवों में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों विशेषताएँ पायी जाती हैं। सकारात्मक के तहत अनेक विशेषताओं में संयुक्त परिवार प्रथा का प्रचलन, आपस में सौहार्द एवं तादात्मपूर्ण संबंध, परस्पर सहयोग एवं निर्भरता का भाव, आपस में अंतरंग संबंध, सुख दुःख के समय एक दूसरे का सहयोग आदि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वे सब विशेषताएं है जिन्हें न केवल हमेशा संरक्षित करने की जरूरत है अपितु पुष्ट करने की आवश्यकता है। परन्तु इसी के साथ आज भी गाँवों में जाति आधारित भेदभाव, छूआछूत, बाल-विवाह, सामंती-मानसिकता, महिलाओं के प्रति संकीर्ण व अप्रगतिशील दृष्टिकोण आदि सामाजिक संरचना में वे कमियाँ है जो ग्रामीण विकास के माध्यम से गाँव को "विकसित गाँव" का दर्जा देने में बाधक होती है। हमें इन सभी सामाजिक समस्याओं को ग्रामीण समाज के सभी हितधारकों को शामिल करते हुए परामर्श व संवाद के माध्यम से समाप्त करने के प्रयास करने होंगे, तभी गाँव को सच्चे अर्थ में विकासयुक्त कहा जाएगा।

सूचना व प्रौद्योगिकी के इस युग में संचार के साधनों तक पहुँच विकास का एक पर्याय बन गयी है। गाँवों को भी डिजिटलीकरण की इस प्रक्रिया में साथ लेकर चलना होगा। नेशनल ऑप्टिक फाइबर नेटवर्क या भारत नेट प्रोग्राम के माध्यम से जल्द से जल्द पंचायतों को इंटरनेट से जोड़ना होगा। इसके इतर प्रत्येक गाँव में इंटरनेट के दैनिक उपभोग व सरकारी सुविधाओं के पंजीयन, आवेदन, तथ्य प्राप्ति हेतु आधारिक संरचना का विकास करना अत्यंत आवश्यक है। इस संदर्भ में राजस्थान सरकार के "ई-मित्र" कार्यक्रम का अनुकरण

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सभी राज्यों द्वारा किया जा सकता है। इसके अलावा, ग्रामीण क्षेत्रों तक मोबाइल संचार सक्षम बनाने हेतु दूरस्थ व पहाड़ी क्षेत्रों को लक्षित करते हुए स्पेक्ट्रम आवंटन किया जा सकता है।

ग्रामीण भारत को शहरी क्षेत्रों से जोड़ने हेतु सड़क, रेल एवं जहाँ अन्तर्देशीय जल परिवहन की संभावनाएँ उपलब्ध हैं, का विकास करना अत्यंत आवश्यक है। सड़क इनमें सबसे महत्वपूर्ण है। प्रत्येक गाँव की एक डामरीकृत सड़क से न केवल ब्लाक से कनेक्टिविटी आवश्यक है अपितु एक गाँव को दूसरे गाँव से भी जोड़ना आवश्यक है। गाँव के अंदर भी सी सी रोड़ का निर्माण अत्यंत अपरिहार्य हो गया है।

ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्येक 3-4 या अधिक गाँवों का क्लस्टर बनाकर मूलभूत आवश्यकताओं हेतु बाजार, मंडी आदि की स्थापना की जा सकती है। इसी के साथ-साथ मेगा फुड पार्क की स्थापना के सरकारी प्रयासों में भी तेजी आने की आवश्यकता है ताकि अधिक से अधिक रोजगार के अवसरों का सृजन हो सके।

ग्रामीण आबादी का अधिकांश हिस्सा आज भी गरीबी से ग्रस्त है, कच्चे घरों में रहता है। ग्रामीण जनसंख्या को गरीबी से बाहर निकालने हेतु मनरेगा के तहत

गाँवों के विकास के सन्दर्भ में बस एवं विपक्ष की ओर स्पष्ट करते हुए आलोचना के बिन्दुओं को भी लिखें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रोजगार दिवसों की संख्या को बढ़ाना चाहिए। पक्के आवास प्रदान करने हेतु प्रत्येक आवश्यक को प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के लाभ सुनिश्चित कराए जाएं। इसके अलावा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन को भी और अधिक दक्षता के साथ लागू किये जाने की आवश्यकता है।

शासन के स्तर पर पंचायती राज संस्थाओं – विशेषतः ग्राम पंचायत व ग्राम सभा को शक्तियों का हस्तान्तरण आवश्यक है। इस संदर्भ में 3D – विकेन्द्रीकरण, हस्तानान्तरण (Devolution) एवं विकास को अपनाया जाना चाहिए। शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं को इन स्थानीय संस्थाओं को स्थानान्तरित कर दिया जाना चाहिए। इसके अलावा स्वच्छ भारत अभियान, श्यामा प्रसाद मुखर्जी अर्बन मिशन, ग्रामीण विद्युतीकरण भारतनेट, प्रधानमंत्री किसान योजना, वन निवासी अधिनियम के अनुपालन आदि में ग्राम सभा को शक्तियों का हस्तानान्तरण आवश्यक है। विकास की प्रक्रिया का "डाउनवर्ड फिल्ट्रेशन" सिद्धांत के बजाय पिरामिड में नीचे से ऊपर के रास्ते को चुनना चाहिए। गाँवों में पितृसत्तात्मकता को चुनौती देने हेतु महिलाओं की इन स्थानीय संस्थाओं

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात गाँवों के विकास हेतु सरकार द्वारा उठाये गए विभिन्न कदमों का भी उल्लेख करें।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में सशक्त भागीदार आवश्यक है। कुछ राज्यों ने इस संदर्भ में PRIs में महिलाओं को 50% आरक्षण दिया हुआ है परन्तु इसमें हमें "सरपंच पति" जैसी सत्ता के दुरुपयोग जैसी प्रचलनों पर रोक लगाने की आवश्यकता है।

स्वस्थ कृषि, खादी व ग्रामोद्योग, सैनिटेशन, विद्युतीय अवसंरचना के साथ-साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधाएँ, बागवानी, मत्स्यपालन, हथकरघा व बुनाई को प्रोत्साहन, सड़कों का गाँव के अंदर व आसपास के गाँवों के साथ कनेक्टिविटी हेतु विकास, बाजार व कृषि मंडी की निकटता, सरकारी योजनाओं व लाभों का लाभ उठाने व पंजीकृत कराने हेतु ई-मित्र जैसे नवाचार, ग्रामीण पंचायतों को भारतनेट के माध्यम से इंटरनेट से जोड़ना, सामाजिक कुरीतियों व महिलाओं के प्रति पूर्वाग्रहों की समाप्ति, विद्यालयों व अन्य सरकारी भवनों में महिलानुकूल अवसंरचना का विकास, ग्रामीण नवाचार को पहचान देने हेतु स्टार्ट-अप को प्रोत्साहन, बेहतर आवास व रोजगार के अवसर, खाद्य सुरक्षा मिशन व अत्योदय व पीडीएस का दक्षता से अनुपालन सुनिश्चित कर ग्रामीण प्रकृति को बचाए रखते हुए गाँव का विकास किया जा सकता है।

(46)

Copyright – Drishti The Vision Foundation